समाज की पारिभाषिक विवेचना (Society Defined)

विद्वानों ने समाज को अनेक प्रकार से परिभाषित किया है।

मैकाइवर और पेज का कथन है, "समाज रीतियों, कार्यविधियों, अधिकार व पारस्परिक सहायता, अनेक समूहों तथा अनेक विभाजनों, मानव व्यवहार के नियन्त्रणों तथा स्वतन्त्रताओं की व्यवस्था है। इस सदैव परिवर्तित होने वाली तथा जटिल व्यवस्था को ही हम समाज कहते हैं। यह सामाजिक सम्बन्धों का जाल है और सदैव परिवर्तित होता रहता है।"

मैकाइवर ने उपयुर्क्त परिभाषा में केवल यही नहीं बताया है कि समाज सामाजिक सम्बन्धों का एक जाल मात्र है, बल्कि उन आधारों को स्पष्ट किया है जिनके द्वारा ये सम्बन्ध व्यवस्थित ढाँचे का निर्माण करते हैं।

मैकाइवर की परिभाषा में समाज के प्रमुख आधार —

(1) रीतियाँ (Usages) —

रीतियाँ अथवा प्रथाएँ कार्य करने के वे तरीके हैं जिनका किसी समूह अथवा समुदाय में एक लम्बे समय से प्रचलन रहा है। ये रीतियाँ व्यवहार के लगभग सभी क्षेत्रों में पायी जाती हैं, जैसे- खान-पान, विवाह, वृद्ध व्यक्तियों से मिलने, शिक्षा प्राप्त करने, संस्कारों को पूरा करने, बातचीत करने और इसी प्रकार लगभग सभी कार्यों को करने के लिए कुछ विशेष रीतियाँ होती हैं।

(2) कार्य प्रणालियाँ (Procedures)

कार्य प्रणालियों से मैकाइवर का

अभिप्राय व्यवहार के नियमों अथवा विभिन्न संस्थाओं से है। हम प्रत्येक सम्बन्ध को स्थापित करते समय इस बात का ध्यान रखते हैं कि हमारे नियम अथवा सुविधाएँ उस सम्बन्ध को स्थापित करने की अनुमति प्रदान करती है अथवा नहीं। अधिकतर सदस्यों से यह आशा की जाती है कि इन्हीं प्रणालियों द्वारा अपने कार्यों को पूरा करेंगे।

(3) अधिकार (Authority)

प्रत्येक समाज में कुछ व्यक्तियों के सम्बन्ध अधिकार के होते हैं और कुछ व्यक्तियों के सम्बन्ध अनुसरण करने वालों के। इसके फलस्वरूप कोई भी व्यक्ति अनियन्त्रित रूप से सम्बन्धों की स्थापना नहीं कर पाता।

(4) पारस्परिक सहयोग (Mutual Aid)—

समाज एक व्यवस्था है जिसका स्थायित्व पारस्परिक सहयोग से ही सम्भव है।

(5) समूह तथा विभाग (Grouping and Divisions)

समूह तथा विभागों से मैकीवर का अभिप्राय समुदायों, समितियों, समूहों और संगठनों से है।

(6) मानव-व्यवहार के नियन्त्रण (Controls of Human Behaviour)—

सामाजिक सम्बन्धों को व्यवस्थित बनाये रखने के लिए व्यक्तियों तथा समूहों के व्यवहारों पर नियन्त्रण रखना आवश्यक होता है।

(7) स्वतन्त्रता (Liberty)—

कोई भी सामाजिक व्यवस्था अपने सदस्यों पर अधिक नियन्त्रण लगाकर लम्बे समय तक जीवित नहीं रह सकती। जिससे वे विचार-विमर्श के द्वारा अपने सम्बन्धों को अधिक व्यवस्थित बना सकें।

गिन्सबर्ग (Morris Ginsberg) का कथन है कि "समाज ऐसे व्यक्तियों का संग्रह है जो कुछ सम्बन्धों अथवा व्यवहार की विधियों द्वारा संगठित है तथा उन व्यक्तियों से भिन्न है जो इस प्रकार के सम्बन्धों द्वारा बंधे हुए नहीं हैं अथवा जिनके व्यवहार उनसे भिन्न हैं।"

इस परिभाषा से स्पष्ट होता है कि समाज व्यक्तियों के बीच पाये जाने वाले सम्बन्धों की व्यवस्था है।

टालकट पारसन्स (Talcott Parsons) ने समाज को अत्यधिक वैज्ञानिक रूप से परिभाषित करते हुए कहा है, "समाज को उन मानवीय सम्बन्धों की पूर्ण जटिलता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो साधन (means) और साध्य (ends) के सम्बन्ध द्वारा क्रिया करने से उत्पन्न हुए हों, चाहे वो यथार्थ हों, अथवा प्रतीकात्मक।"

पारसन्स की परिभाषा में 'क्रिया' (action) शब्द का विशेष महत्व है। हमारे सभी व्यवहार 'क्रिया' में नहीं होते बल्कि केवल ऐसे कार्य, जो किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए साधन के रूप में किये गये हों, क्रिया कहलाते हैं। इस प्रकार पारसन्स के अनुसार, सभी क्रियाएँ चाहे वे प्रत्यक्ष रूप से की जाती हों अथवा केवल प्रतीकात्मक (Symbolic) हों, सामाजिक सम्बन्धों का निर्माण करती हैं, और इन्हीं सम्बन्धों से बनने वाली व्यवस्था को हम समाज कहते हैं।

गिलिन (J.L. Gillin) ने समाज की परिभाषा देते हुए लिखा है, "समाज तुलनात्मक रूप से सबसे बड़ा और स्थायी

समूह है जो सामान्य हितों, सामान्य मूल्यों, सामान्य रहन-सहन तथा पारस्परिक सहयोग (esprit de corps) अथवा अपनत्व (belongingness) की भावना से युक्त है तथा जिसके आधार पर वह अपने को बाहर के समूहों से पृथक रखता है।" वास्तव में गिलिन ने समाज की जिन विशेषताओं का उल्लेख किया है वे मूल्य रूप से समुदाय की विशेषताओं को स्पष्ट करती है, समाज की नहीं।

रयूटर (Reuter) ने समाज को सबसे सरल रूप से परिभाषित करते हुए कहा है, "समाज एक अमूर्त धारणा है जो एक समूह के सदस्यों के बीच पाये जाने वाले पारस्परिक सम्बन्धों की सम्पूर्णता का बोध करती है।" इसका तात्पर्य है कि सामाजिक अन्तक्रियाएँ तथा सामाजिक सम्बन्ध ही समाज के निर्माण का वास्तविक आधार है। व्यक्ति की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उस पर जो विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक दबाव पड़ते हैं, उन्हीं के प्रभाव से वह व्यवस्थित रूप से सम्बन्ध स्थापित करता है। इन्हीं सम्बन्धों की समग्रता से समाज को एक विशेष स्वरूप प्राप्त होता है।

व्यक्तियों का समूह → व्यक्ति की विभिन्न आवश्यकताएँ → आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक दबाव → नियमबद्ध व्यवस्था = समाज।